पत्रिका
3 फरवरी 2010

शिक्षा के क्षेत्र में प्रदर्शन पर रिपोर्ट

सिरमौर बनने की राह पर प्रदेश

अच्छी खबर

सरकारी स्कूल दे रहे बेहतर शिक्षा, केरल और गोवा जैसे उन्नत राज्यों से होड़

नई दिल्ली, 2 फरवरी (ब्यूरो)। जिसे बीमारू राज्यों की धुरी और पिछड़ेपन के तमाम तमगे हासिल हों, उसी मप्र के लिए एक अच्छी खबर भी है और वह है शिक्षा के क्षेत्र में उसकी रिकॉर्ड फाइल में बराबर हो रहे सुधार की। देशभर के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की स्थिति पर स्वयंसेवी संगठन 'प्रथम' की सालाना रिपोर्ट में मप्र के जो आंकड़े आए हैं, वह वर्तमान नहीं तो कम से कम बेहतर भविष्य के प्रति आश्वस्त करने वाले हैं।

पहली कक्षा के बच्चों की अक्षरों को पहचानने और उन्हें पढ़ पाने की क्षमता के मामले में प्रदेश के बच्चे केरल, गोवा और पूर्वोत्तर की अपेक्षाकृत अधिक साक्षर राज्यों से होड़ कर रहे हैं। यहां तक कि इन मानकों में आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, महाराष्ट्र और पंजाब जैसे सम्पन्न राज्य भी मप्र के बच्चों से काफी पीछे दिख रहे हैं। उप्र, बिहार, राजस्थान, उम्मराखंड, झारखंड और छत्तीसगढ़ तो इस मोर्चे में कहीं आसपास भी नहीं ठहरते। देश के अन्य राज्यों के ठीक उलट मप्र के सरकारी स्कूल निजी स्कूलों से बेहतर शिक्षा दे रहे हैं।

स्कूल छोड़ने के मामले कम

स्कूल छोड़ने के मामले में भी मप्र में काफी कमी आई है। यहां स्थिति उत्तराखंड को छोड़ पूरे उतर भारत में सबसे अच्छी है। छह से 14 साल के बच्चों के स्कूल छोड़ने की सबसे कम 0.1 प्रतिशत दर केरल में है तो गोवा में यह संख्या 0.2 तमिलनाडु में 0.9, उत्तराखंड में 1.4, मप्र में 2.3 और राजस्थान में 9.5 प्रतिशत है। 15 से 16 साल की उम्र के लड़कों के स्कूल छोड़ने की दर जहां केरल और गोवा में 0.5 प्रतिशत है, वहीं मप्र में यह दर 12.6 और उप्र में 20.1 प्रतिशत है। लड़कियों के मामले में यह दर उत्तर भारतीय राज्यों में ऊंची है। मप्र में इस उम्र की 15.5 प्रतिशत लड़कियां स्कूल छोड़ देती हैं, तमिलनाडु में 10.3, उप्र में 23.5, राजस्थान में 28.6, सबसे कम 0.5 प्रति. लड़कियां केरल में स्कूल छोड़ती हैं।

59.2 फीसद बच्चे पहचान और पढ़ सकते हैं अक्षर

प्रथम ने अपनी एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट 2009 (असर) में कहा है कि केरल में जहां पहली कक्षा के 3.9 प्रतिशत बच्चे अक्षर भी नहीं पहचानते, वहीं मप्र के 7.5, उप्र के 43.5, तमिलनाडु के 55.4, उत्तराखंड के 24.5, राजस्थान के 42.9 और पंजाब के 14.4 प्रतिशत बच्चे अक्षर नहीं पहचान सकते। इसी कक्षा के अक्षरों को पहचानने और पढ़ने वाले बच्चों का मप्र में सर्वाधिक 59.2 प्रतिशत है। पंजाब में यह प्रतिशत 56.4 और राजस्थान एवं उत्तराखंड में यह प्रतिशत 44 से अधिक है। केरल और तमिलनाडु मप्र से काफी पीछे हैं। अंकगणित में भी धीरे धीरे सुधार नजर आ रहा है। पहली कक्षा में प्रदेश के 9.2 प्रतिशत बच्चे अंकों को नहीं पहचानते। 60 प्रतिशत से अधिक बच्चे एक से नौ तक के अंक पहचानते हैं 11 से 99 तक अंकों को पहचानने में सक्षम बच्चों का प्रतिशत 24.9 है।